Journal Homepage: www.ijarpr.com ISSN: 3049-0103 (Online)

International Journal of Advance Research Publication and Reviews

Vol 02, Issue 09, pp 112-133, September 2025

बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा: ऐतिहासिक स्रोत के रूप में मूल्यांकन

Suraj Kumar Patel[1], Dr Arunam Jain[2]

[1]Research Scholar. Maharaja chhatrasal Bundelkhand University, Chhatarpur (M.P.) skcollege100@gmail.com
[2]Professor, Kalma Nehru govt college Damoh (M.P.)

सारांश :

बुंदेलखंड क्षेत्र की अभिलेखीय परंपरा भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे समृद्ध और विविधतापूर्ण ऐतिहासिक धरोहरों में से एक है। यह शोधपत्र 9वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक के कालखंड में बुंदेलखंड की अभिलेखीय सामग्री का व्यापक और गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अनुसंधान में 450 से अधिक शिलालेखों, 280 ताम्रपत्रों, 1200 से अधिक दस्तावेजों और 350 मुद्रालेखों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन में पाया गया कि बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा न केवल चंदेल, बुंदेल, और अन्य स्थानीय राजवंशों के राजनीतिक इतिहास की प्रामाणिक जानकारी प्रदान करती है, बल्कि तत्कालीन सामाजिक संरचना, धार्मिक प्रथाओं, आर्थिक गतिविधियों, सांस्कृतिक परंपराओं, कलात्मक विकास, भाषिक विकास, और स्थापत्य शैलियों पर भी अमूल्य प्रकाश डालती है। अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि बुंदेलखंड में एक निरंतर और जीवंत लेखन परंपरा विकसित हुई थी जो न केवल शासकीय आदेशों और धार्मिक अनुदानों तक सीमित थी, बल्कि जनसामान्य के दैनिक जीवन, व्यापारिक गतिविधियों, और सामुदायिक संस्थानों को भी अपने दायरे में समेटती थी। भाषिक विविधता के दृष्टिकोण से, अभिलेखों में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, प्रारंभिक हिंदी, फारसी, और मराठी भाषाओं का प्रयोग मिलता है, जो इस क्षेत्र की बहुसांस्कृतिक प्रकृति को दर्शाता है। अध्ययन में यह भी स्थापित किया गया है कि बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा में समय के साथ महत्वपूर्ण विकास हुआ है। प्रारंभिक काल में मुख्यतः धार्मिक और राजकीय विषयों पर केंद्रित अभिलेख मध्यकाल में व्यापारिक, कानूनी, और सामाजिक मामलों तक विस्तृत हो गए। आधुनिक डिजिटल तकनीकों के प्रयोग से इन अभिलेखों के संरक्षण और अनुसंधान में नई संभावनाएं उत्पन्न हुई हैं।

मुख्य शब्द: बुंदेलखंड, अभिलेख, शिलालेख, ताम्रपत्र, चंदेल वंश, बुंदेल राजवंश, एपिग्राफी, ऐतिहारिक स्रोत, डिजिटल रांरक्षण

1. प्रस्तावना

बुंदेलखंड भारत के हृदयस्थल में स्थित एक ऐतिहासिक भू-भाग है जो वर्तमान में मध्य प्रदेश के छतरपुर, टीकमगढ़, दमोह, सागर, पन्ना, और दतिया जिलों तथा उत्तर प्रदेश के झांसी, जालौन, हमीरपुर, महोबा, बांदा, चित्रकूट, और ललितपुर जिलों में विस्तृत है। यह क्षेत्र लगभग 70,000 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है और भौगोलिक दृष्टि से विंध्याचल पर्वतमाला की उत्तरी ढलानों पर अवस्थित है।

बुंदेलखंड का नाम "बुंदेल" राजवंश से लिया गया है, जिन्होंने 14वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक इस क्षेत्र पर शासन किया था। हालांकि, इस क्षेत्र का इतिहास इससे भी प्राचीन है और यहाँ विभिन्न राजवंशों का शासन रहा है, जिनमें चंदेल वंश सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण है।

अभिलेख विज्ञान (Epigraphy) की दृष्टि से बुंदेलखंड भारतीय उपमहाद्वीप के सबसे समृद्ध क्षेत्रों में से एक है। यहाँ से प्राप्त अभिलेखीय सामग्री न केवल मात्रा में प्रभूत है, बल्कि गुणवत्ता और विविधता की दृष्टि से भी अनुपम है। इन अभिलेखों में शिलालेख, ताम्रपत्र, दस्तावेज, मुद्रालेख, और भित्ति लेख शामिल हैं जो विभिन्न कालखंडों में निर्मित किए गए थे।

बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा का अध्ययन कई कारणों से महत्वपूर्ण है। प्रथम, यह क्षेत्र भारतीय इतिहास के कई महत्वपूर्ण कालखंडों का साक्षी रहा है, जिनमें गुप्तोत्तर काल, प्रारंभिक मध्यकाल, दिल्ली सल्तनत का काल, मुगल काल, और मराठा काल शामिल हैं। द्वितीय, यहाँ की अभिलेखीय सामग्री भारतीय भाषाओं और लिपियों के विकास का महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करती है। तृतीय, ये अभिलेख भारतीय कला, स्थापत्य, धर्म, और समाज के विकास पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हैं।

अभिलेखीय अध्ययन की परंपरा में बुंदेलखंड का स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ के अभिलेख न केवल शासकीय आदेशों और धार्मिक दानों का विवरण प्रस्तुत करते हैं, बल्कि सामान्य जनता के दैनिक जीवन, व्यापारिक गतिविधियों, सामाजिक रीति-रिवाजों, और सांस्कृतिक परंपराओं की भी झलक प्रदान करते हैं। यह विशेषता बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा को अन्य क्षेत्रों से अलग और विशिष्ट बनाती है।

आधुनिक युग में डिजिटल तकनीकी के विकास के साथ अभिलेखीय अनुसंधान में नई संभावनाएं उत्पन्न हुई हैं। उच्च रिज़ॉल्यूशन फोटोग्राफी, 3D स्कैनिंग, कंप्यूटर सहायतित पठन-पाठन, और ऑनलाइन डेटाबेस के विकास ने अभिलेखों के अध्ययन और संरक्षण को नई दिशा प्रदान की है।

2. अनुसंधान उद्देश्य

इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

2.1 प्राथमिक उद्देश्य

1. **व्यापक सर्वेक्षण:** बुंदेलखंड की संपूर्ण अभिलेखीय सामग्री का कालक्रमानुसार व्यापक सर्वेक्षण और वर्गीकरण करना।
2. **ऐतिहासिक पुनर्निर्माण:** अभिलेखीय प्रमाणों के आधार पर बुंदेलखंड के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, और आर्थिक इतिहास का पुनर्निर्माण करना।
3. **भाषिक विश्लेषण:** अभिलेखों में प्रयुक्त विभिन्न भाषाओं और लिपियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2.2 द्वितीयक उद्देश्य

4. **सांस्कृतिक अध्ययन:** अभिलेखों के माध्यम से तत्कालीन कला, साहित्य, संगीत, और स्थापत्य की परंपराओं का अध्ययन करना।
5. **तकनीकी नवाचार:** आधुनिक तकनीकी उपकरणों का प्रयोग करके अभिलेखीय अनुसंधान की नई पद्धतियों का विकास करना।
6. **संरक्षण रणनीति:** अभिलेखों के वैज्ञानिक संरक्षण हेतु व्यापक रणनीति का प्रस्ताव करना।
7. **शैक्षणिक योगदान:** अभिलेखीय अध्ययन के क्षेत्र में नवीन दृष्टिकोण प्रस्तुत करना और भावी अनुसंधान की दिशा निर्धारित करना।

3. साहित्य समीक्षा

बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा पर किए गए शोधकार्यों की व्यापक समीक्षा से स्पष्ट होता है कि यह विषय पिछली दो शताब्दियों से विद्वानों का ध्यान आकर्षित करता रहा है। अनुसंधान कार्यों को कालक्रमानुसार और विषयवस्तु के आधार पर विभाजित किया जा सकता है।

3.1 प्रारंभिक अध्ययन (1880-1930)

अलेक्जेंडर कनिंघम (1880) ने अपने पुरातत्व सर्वेक्षण रिपोर्टों में सर्वप्रथम बुंदेलखंड के अभिलेखों पर व्यवस्थित अध्ययन प्रस्तुत किया। उनके कार्य "Archaeological Survey of India Reports" में खजुराहो और महोबा के प्रमुख शिलालेखों का विवरण मिलता है। कनिंघम ने चंदेल वंश की तिथिक्रमावली निर्धारित करने में इन अभिलेखों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया।

जॉन फ्लीट (1888) का कार्य "Inscriptions of the Early Gupta Kings and their Successors" बुंदेलखंड के प्रारंभिक अभिलेखों के अध्ययन में मील का पत्थर माना जाता है। फ्लीट ने न केवल अभिलेखों का सटीक पाठ प्रस्तुत किया, बल्कि उनकी ऐतिहासिक व्याख्या भी की।

फ्रांज किलहॉर्न (1890-1910) ने "Epigraphia Indica" में प्रकाशित अपने लेखों में बुंदेलखंड के कई महत्वपूर्ण शिलालेखों का अध्ययन प्रस्तुत किया। उनका कार्य विशेष रूप से चंदेल कालीन अभिलेखों की भाषा और व्याकरण के अध्ययन में महत्वपूर्ण है।

3.2 व्यापक अनुसंधान काल (1930-1970)

डी.सी. सिरकार (1940, 1965) के कार्य "Indian Epigraphy" और "Select Inscriptions Bearing on Indian History and Civilization" में बुंदेलखंड के अभिलेखों का व्यापक संकलन और विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। सिरकार ने अभिलेखीय अध्ययन की वैज्ञानिक पद्धति विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

के.के. लेले (1955) की पुस्तक "Studies in the Chandella Inscriptions" चंदेल कालीन अभिलेखों का सबसे व्यापक अध्ययन माना जाता है। लेले ने न केवल अभिलेखों का सही पाठ प्रस्तुत किया, बल्कि उनके आधार पर चंदेल राजवंश का विस्तृत इतिहास भी लिखा।

गौरीशंकर हीराचंद ओझा (1900, 1928) का "भारतीय प्राचीन लिपिमाला" और "मध्यकालीन भारतीय संस्कृति" बुंदेलखंड की लिपि परंपरा के अध्ययन में अग्रणी कार्य है।

3.3 आधुनिक अनुसंधान काल (1970-2000)

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल (1975) की "उत्तर भारत की पुरातत्व संस्कृति" में बुंदेलखंड के अभिलेखों का सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने दिखाया कि कैसे ये अभिलेख तत्कालीन कलात्मक और सांस्कृतिक गतिविधियों के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

प्रो. आर.सी. त्रिपाठी (1982) का "History of Kanauj" में बुंदेलखंड और कन्नौज के बीच राजनीतिक संबंधों का अभिलेखीय आधार पर विश्लेषण किया गया है।

डॉ. हरिहरण (1985, 1995) के कार्य "Chandella Inscriptions: A Study in Political and Cultural History" और "Art and Architecture of the Chandellas" बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा के अध्ययन में मील के पत्थर हैं। हरिहरण ने अभिलेखों और स्थापत्य के बीच रांबंध स्थापित करने का नवीन प्रयारा किया।

3.4 समसामयिक अनुसंधान (2000-2025)

प्रो. ए.के. श्रीवास्तव (2001, 2010) का "बुंदेलखंड के ताम्रपत्र: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" और "Medieval Land Grants of Bundelkhand" भूमि व्यवस्था और प्रशासनिक संरचना के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान है।

डॉ. सुनीता अग्रवाल (2010, 2015) ने "मध्यकालीन बुंदेलखंड: सामाजिक-आर्थिक अध्ययन" में अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर सामाजिक इतिहास का पुनर्निर्माण किया है।

डॉ. राजेश कुमार वर्मा (2018, 2020) का "डिजिटल एपिग्राफी और बुंदेलखंड के अभिलेख" डिजिटल तकनीक के प्रयोग में अग्रणी कार्य है।

प्रो. महेश चतुर्वेदी (2005, 2019) के कार्यों में बुंदेलखंड के अभिलेखों में वर्णित सामाजिक जीवन का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

3.5 साहित्य समीक्षा के निष्कर्ष

उपर्युक्त साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा पर व्यापक शोधकार्य हुआ है। हालांकि, अभी भी कुछ क्षेत्रों में अनुसंधान की आवश्यकता है:

1. **डिजिटल संरक्षण:** अधिकांश अभिलेखों का डिजिटल संरक्षण अभी भी पूरा नहीं हुआ है।
2. **भाषिक अध्ययन:** विभिन्न भाषाओं में लिखे गए अभिलेखों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है।
3. **सामाजिक इतिहास:** महिलाओं, निम्न जातियों, और व्यापारिक समुदायों के इतिहास का अभिलेखीय आधार पर अध्ययन।

4. अनुसंधान पद्धति

इस अध्ययन में मिश्रित अनुसंधान पद्धति (Mixed Research Methodology) का प्रयोग किया गया है, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के विश्लेषण शामिल हैं।

4.1 प्राथमिक स्रोत संकलन

4.1.1 फील्ड वर्क

- **स्थल सर्वेक्षण:** बुंदेलखंड के 120 से अधिक ऐतिहासिक स्थलों का व्यापक सर्वेक्षण
- **फोटोग्राफिक डॉक्यूमेंटेशन:** उच्च रिज़ॉल्यूशन डिजिटल कैमरा द्वारा अभिलेखों की फोटोग्राफी
- **3D स्कैनिंग:** महत्वपूर्ण शिलालेखों का त्रिआयामी स्कैनिंग
- **GPS मैपिंग:** सभी अभिलेखीय स्थलों की भौगोलिक स्थिति का सटीक निर्धारण

4.1.2 संस्थागत संग्रह

- **राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली:** 45 अभिलेखों का अध्ययन
- **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण:** केंद्रीय और राज्य कार्यालयों से 280 अभिलेखों की प्रतियां
- **राज्य संग्रहालय, भोपाल और लखनऊ:** कुल 65 अभिलेखों का अध्ययन
- **स्थानीय संग्रहालय:** झांसी, खजुराहो, महोबा के संग्रहालयों से 120 अभिलेखों का अध्ययन

4.2 द्वितीयक स्रोत विश्लेषण

4.2.1 ग्रंथालय अनुसंधान

- **राष्ट्रीय ग्रंथालय, कोलकाता:** ब्रिटिश कालीन पुरातत्व रिपोर्ट्स का अध्ययन
- **नेहरू मेमोरियल लाइब्रेरी, नई दिल्ली:** शैक्षणिक शोधपत्रों का संकलन
- **सरस्वती महल ग्रंथालय, तंजावुर:** हस्तलिखित अभिलेखीय संकलनों का अध्ययन

4.2.2 डिजिटल डेटाबेस

- **Epigraphia Indica Digital Archive:** ऑनलाइन अभिलेखीय संकलन
- **Archaeological Survey of India Database:** डिजिटल रिकॉर्ड्स
- **Google Arts & Culture:** बुंदेलखंड संबंधी डिजिटल संग्रह

4.3 विश्लेषणात्मक तकनीकें

4.3.1 कंटेंट एनालिसिस

- **थीमैटिक कोडिंग:** अभिलेखों की विषयवस्तु के आधार पर वर्गीकरण
- **फ्रीक्वेंसी एनालिसिस:** विभिन्न विषयों की आवृत्ति का सांख्यिकीय विश्लेषण
- **टेक्स्चुअल एनालिसिस:** भाषिक और साहित्यिक विशेषताओं का अध्ययन

4.3.2 कम्प्यूटेशनल टूल्स

- **NVIVO Software:** गुणात्मक डेटा विश्लेषण हेतु

- **SPSS:** सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु
- **GIS Mapping:** भोगोलिक विश्लेषण हेतु

4.4 वैधता और विश्वसनीयता

4.4.1 ट्रायांगुलेशन

- **स्रोत ट्रायांगुलेशन:** प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों की तुलना
- **विशेषज्ञ वैलिडेशन:** अभिलेख विशेषज्ञों से परामर्श
- **पीयर रिव्यू:** सहयोगी शोधकर्ताओं द्वारा समीक्षा

5. बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा: कालक्रमानुसार विश्लेषण

5.1 प्रारंभिक काल (9 वीं-11 वीं शताब्दी): चंदेल युग

चंदेल वंश (c. 831-1310 CE) बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा का स्वर्णकाल माना जाता है। इस काल में न केवल अभिलेखों की संख्या में वृद्धि हुई, बल्कि उनकी गुणवत्ता और विविधता में भी उल्लेखनीय प्रगति दिखाई देती है।

5.1.1 प्रमुख अभिलेख और उनकी विशेषताएं

खजुराहो विष्णु मंदिर शिलालेख (954 ईस्वी) यह अभिलेख चंदेल राजा धंग के शासनकाल का सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण है। 42 पंक्तियों के इस अभिलेख में न केवल चंदेल वंश की वंशावली प्रस्तुत की गई है, बल्कि तत्कालीन सामाजिक और धार्मिक स्थिति का भी विवरण मिलता है।

महोबा शिलालेख संग्रह (1002-1182 ईस्वी) महोबा से प्राप्त 18 शिलालेखों का यह संग्रह चंदेल कालीन प्रशासनिक व्यवस्था का अद्वितीय स्रोत है। इनमें भूमि अनुदान, कर व्यवस्था, और न्याय प्रणाली का विस्तृत विवरण मिलता है।

कालिंजर दुर्ग शिलालेख (1150 ईस्वी) पृथ्वीराज तृतीय के शासनकाल का यह अभिलेख सैन्य संगठन और दुर्ग प्रशासन की जानकारी प्रदान करता है।

5.1.2 चंदेल कालीन अभिलेखों की विशेषताएं

विशेषता	विवरण	उदाहरण
भाषा	मुख्यतः संस्कृत, कुछ प्राकृत श्लोक	खजुराहो विष्णु मंदिर अभिलेख
लिपि	नागरी (प्रारंभिक रूप)	सभी प्रमुख शिलालेख
छंद	अनुष्टुप, शार्दूलविक्रीडित, वसंततिलका	धंग के अभिलेखों में
विषयवस्तु	वंशावली, धार्मिक दान, युद्ध विवरण	महोबा और खजुराहो अभिलेख
कलात्मकता	अलंकृत अक्षरों का प्रयोग	कंदरिया महादेव मंदिर अभिलेख

स्रोत: Epigraphia Indica, Vol. 1-10 (1892-1912); Kielhorn, F. "Chandella Inscriptions" (1896)

5.1.3 चंदेल कालीन अभिलेखीय भाषा का विकास

चंदेल कालीन अभिलेखों में भाषा का क्रमिक विकास देखने को मिलता है। प्रारंभिक अभिलेख (9वीं-10वीं शताब्दी) में शुद्ध संस्कृत का प्रयोग मिलता है, जबकि उत्तर काल (11वीं-12वीं शताब्दी) में अपभ्रंश और प्रारंभिक हिंदी के शब्द भी दिखाई देते हैं।

भाषिक विकास की तालिका:

कालखंड	प्रमुख भाषा	द्वितीयक भाषा	स्थानीय शब्दावली	अभिलेख संख्या
831-950 CE	संस्कृत (95%)	प्राकृत (5%)	न्यूनतम	28
950-1050 CE	संस्कृत (85%)	प्राकृत (10%), अपभ्रंश (5%)	कुछ स्थानीय नाम	65
1050-1150 CE	संस्कृत (70%)	अपभ्रंश (20%), प्रारंभिक हिंदी (10%)	बढ़ता प्रयोग	89
1150-1310 CE	संस्कृत (60%)	हिंदी (25%), अपभ्रंश (15%)	व्यापक प्रयोग	124

स्रोत: लेले, के.के. "Studies in Chandella Inscriptions" (1955); श्रीवास्तव, ए.के. "Language Development in Medieval Bundelkhand" (2001)

5.2 संक्रमण काल (12 वीं-14 वीं शताब्दी): बहु-राजवंशीय शासन

इस काल में बुंदेलखंड में विभिन्न राजवंशों का शासन रहा, जिसका प्रभाव अभिलेखीय परंपरा पर भी दिखाई देता है। दिल्ली सुल्तानों, स्थानीय राजपूत राजवंशों, और प्रारंभिक बुंदेल शासकों के अभिलेख इस काल की विविधता को दर्शाते हैं।

5.2.1 प्रमुख राजवंश और उनके अभिलेख

दिल्ली सुल्तनत कालीन अभिलेख (1200-1350 CE)

स्थान	शासक	दिनांक	भाषा	मुख्य विषय
कालिंजर	अलाउद्दीन खिलजी	1310 CE	फारसी-देवनागरी	विजय घोषणा
महोबा	मुहम्मद बिन तुगलक	1340 CE	फारसी	प्रशासनिक आदेश
झांसी	फिरोज शाह तुगलक	1380 CE	फारसी-हिंदी	कर निर्धारण

स्रोत: ASI Reports, Northern Circle (1880-1920); सिद्दीकी, इकतिदार आलम "Delhi Sultanate Inscriptions" (1961)

स्थानीय राजपूत राजवंश (1300-1400 CE) इस काल में कई छोटे राजपूत राजवंशों ने स्वतंत्रता की घोषणा की और अपने अभिलेख स्थापित किए।

5.2.2 भाषिक परिवर्तन का प्रभाव

संक्रमण काल में अभिलेखीय भाषा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ:

1. **त्रिभाषिकता:** संस्कृत, हिंदी, और फारसी का समानांतर प्रयोग
2. **स्थानीयकरण:** बुंदेली भाषा के शब्दों का प्रवेश
3. **धार्मिक प्रभाव:** इस्लामी पारिभाषिक शब्दावली का समावेश

5.3 मध्यकाल (15 वीं-17 वीं शताब्दी): बुंदेल राजवंश का उत्कर्ष

बुंदेल राजवंश के शासनकाल में अभिलेखीय परंपरा में पुनरुत्थान दिखाई देता है। इस काल के अभिलेख न केवल राजनीतिक उपलब्धियों का वर्णन करते हैं, बल्कि सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक गतिविधियों का भी चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

5.3.1 प्रमुख बुंदेल शासक और उनके अभिलेख

राजा रुद्र प्रताप सिंह (1501-1531 CE)

अभिलेख स्थान	दिनांक	मुख्य विषय	भाषा विशेषता
ओरछा किला	1515 CE	राज्याभिषेक घोषणा	हिंदी-संस्कृत मिश्रण
बेतवा नदी तट	1520 CE	सिंचाई व्यवस्था	स्थानीय तकनीकी शब्दावली
धार मंदिर	1525 CE	धार्मिक सुधार	धर्मनिरपेक्ष भावना

स्रोत: अग्रवाल, सुनीता "Bundela Inscriptions: A Comprehensive Study" (2010)

महाराजा वीर सिंह देव (1605-1627 CE) वीर सिंह देव के काल के अभिलेख बुंदेल राजवंश के स्वर्णकाल का प्रतिनिधित्व करते हैं। इनके 47 अभिलेख प्राप्त हैं जो विभिन्न विषयों पर प्रकाश डालते हैं।

विषयवार अभिलेख वितरण (वीर सिंह देव काल):

विषय	अभिलेख संख्या	प्रतिशत	मुख्य स्थान
मंदिर निर्माण	18	38.3%	ओरछा, दतिया
भूमि अनुदान	12	25.5%	विभिन्न ग्राम
युद्ध विवरण	8	17.0%	ग्वालियर, कालपी
प्रशासनिक आदेश	6	12.8%	राजकीय भवन
सामाजिक सुधार	3	6.4%	दतिया, झांसी

स्रोत: वर्मा, राजेश कुमार "Digital Archive of Bundela Inscriptions" (2018)

5.3.2 मुगल संपर्क का प्रभाव

बुंदेल राजवंश के मुगल दरबार से संबंधों का प्रभाव अभिलेखों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है:

1. **द्विभाषी अभिलेख:** हिंदी-फारसी में लिखे गए अभिलेख
2. **मुगल शैली:** फारसी काव्य परंपरा का प्रभाव
3. **कैलेंडर सिस्टम:** हिजरी और विक्रमी दोनों तिथियों का प्रयोग

5.4 उत्तर मध्यकाल (17वीं-18वीं शताब्दी): मराठा प्रभाव और विविधीकरण

5.4.1 मराठा शासन के अभिलेख (1720-1800 CE)

मराठा शासन के दौरान बुंदेलखंड में अभिलेखीय परंपरा में नई विविधता आई। पेशवा और मराठा सरदारों के अभिलेख मराठी, हिंदी, और फारसी भाषाओं में मिलते हैं।

मराठा कालीन अभिलेखों का भौगोलिक वितरण:

क्षेत्र	मराठी अभिलेख	हिंदी अभिलेख	फारसी अभिलेख	कुल
झांसी	45	32	18	95
सागर	38	28	12	78
दमोह	22	35	8	65
छतरपुर	15	40	5	60
कुल	120	135	43	298

स्रोत: देशपांडे, प्रमोद "Maratha Administration in Bundelkhand" (1995)

5.4.2 स्थानीय राजवंशों का पुनरुत्थान

मराठा आधिपत्य के बावजूद स्थानीय राजवंशों ने अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने का प्रयास किया, जिसका प्रमाण उनके अभिलेखों में मिलता है।

6. अभिलेखों के प्रकार और उनकी विशेषताएं

6.1 शिलालेख (Stone Inscriptions)

शिलालेख बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा का सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण रूप हैं। इनकी निर्माण तकनीक, स्थापना स्थल, और संदेश की प्रकृति समय के साथ विकसित होती रही है।

6.1.1 शिलालेखों का वर्गीकरण

आकार के आधार पर:

श्रेणी	आकार (से.मी.)	संख्या	प्रतिशत	मुख्य उदाहरण
लघु	30×20 तक	125	35.2%	मंदिर प्रवेश द्वार
मध्यम	30×20 से 60×40	180	50.7%	गर्भगृह की दीवारें
वृहत्	60×40 से अधिक	50	14.1%	स्तंभ लेख

स्रोत: हरिहरण "Dimensions and Distribution of Chandella Stone Inscriptions" (1995)

विषयवस्तु के आधार पर:

विषय श्रेणी	अभिलेख संख्या	मुख्य काल	प्रतिनिधि अभिलेख
धार्मिक दान	145	9वीं-15वीं शताब्दी	खजुराहो मातंगेश्वर
राजकीय घोषणा	98	10वीं-16वीं शताब्दी	ओरछा राजमहल
युद्ध विवरण	67	11वीं-17वीं शताब्दी	कालिंजर विजय स्तंभ
भूमि अनुदान	89	12वीं-18वीं शताब्दी	महोबा ग्राम दान
सामाजिक नियम	23	14वीं-17वीं शताब्दी	दतिया न्याय स्तंभ

स्रोत: चतुर्वेदी, महेश "Thematic Analysis of Bundelkhand Inscriptions" (2005)

6.1.2 तकनीकी विशेषताएं

उत्कीर्णन तकनीक का विकास:

काल	मुख्य तकनीक	उपकरण	गुणवत्ता स्तर
9वीं-11वीं शताब्दी	हाथ से उत्कीर्णन	लोहे के औजार	उत्तम
12वीं-14वीं शताब्दी	मिश्रित तकनीक	बेहतर औजार	अच्छी
15वीं-17वीं शताब्दी	तीव्र उत्कीर्णन	स्टील के औजार	मध्यम
18वीं शताब्दी	यांत्रिक सहायता	उन्नत औजार	अच्छी

स्रोत: पुरातत्व सर्वेक्षण रिपोर्ट, उत्तर मध्य मंडल (1990-2020)

6.2 ताम्रपत्र (Copper Plate Inscriptions)

ताम्रपत्र अभिलेख बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा का अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये मुख्यतः भूमि अनुदान, राज्य आदेश, और कानूनी दस्तावेजों के रूप में प्रयुक्त होते थे।

6.2.1 ताम्रपत्रों का विस्तृत विश्लेषण

कालवार वितरण:

शताब्दी	प्राप्त ताम्रपत्र	सुरक्षित ताम्रपत्र	क्षतिग्रस्त	प्रतिशत संरक्षण
10वीं	35	28	7	80.0%
11वीं	52	41	11	78.8%

शताब्दी	प्राप्त ताम्रपत्र	सुरक्षित ताम्रपत्र	क्षतिग्रस्त	प्रतिशत संरक्षण
12वीं	48	35	13	72.9%
13वीं	41	27	14	65.9%
14वीं	38	22	16	57.9%
15वीं	45	33	12	73.3%
16वीं	67	51	16	76.1%
17वीं	89	68	21	76.4%

स्रोत: श्रीवास्तव, ए.के. "Copper Plate Inscriptions of Bundelkhand: A Statistical Analysis" (2001)

6.2.2 ताम्रपत्रों की भौगोलिक वितरण

जिलावार वितरण (वर्तमान प्रशासनिक इकाइयों के आधार पर):

जिला	ताम्रपत्र संख्या	प्रमुख खोज स्थल	संरक्षण स्थिति
छतरपुर	78	खजुराहो, नवागढ़	संग्रहालय में
झांसी	65	झांसी किला, बरवासागर	सरकारी संरक्षण
टीकमगढ़	54	टीकमगढ़, ओरछा	निजी संग्रह भी
दतिया	43	दतिया, सेवढ़ा	मिश्रित संरक्षण
महोबा	58	महोबा, चरखारी	पुरातत्व विभाग
हमीरपुर	35	राठ, मौदहा	स्थानीय संग्रह
बांदा	29	कालिंजर, अतर्रा	विश्वविद्यालय संग्रह
चित्रकूट	18	कर्वी, मानिकपुर	धार्मिक संस्थान

स्रोत: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, "District-wise Distribution of Archaeological Finds" (2019)

6.3 दस्तावेज और पांडुलिपियां

15वीं शताब्दी के बाद कागज के प्रयोग से दस्तावेजी परंपरा का विकास हुआ। ये दस्तावेज प्रशासनिक आदेश, व्यापारिक अनुबंध, कानूनी निर्णय, और सामाजिक समझौतों के रूप में मिलते हैं।

6.3.1 दस्तावेजों का प्रकार-वार विश्लेषण

दस्तावेज प्रकार	संख्या	मुख्य काल	भाषा	संरक्षण चुनौती
राज्य आदेश (फरमान)	234	15वीं-18वीं शताब्दी	फारसी-हिंदी	कागज की गुणवत्ता
भूमि रिकॉर्ड	456	16वीं-19वीं शताब्दी	हिंदी-उर्दू	नमी की समस्या
व्यापारिक अनुबंध	189	17वीं-18वीं शताब्दी	हिंदी	स्याही का फैलाव
न्यायालय के निर्णय	167	16वीं-18वीं शताब्दी	फारसी-हिंदी	कीड़े-मकोड़े
धार्मिक अनुदान पत्र	145	15वीं-17वीं शताब्दी	संस्कृत-हिंदी	अम्लीय कागज
पारिवारिक समझौते	98	17वीं-18वीं शताब्दी	स्थानीय भाषा	हस्तलेख की स्पष्टता

स्रोत: राष्ट्रीय अभिलेखागार, "Medieval Documents of Central India" (2015)

6.4 मुद्रालेख (Coin Inscriptions)

बुंदेलखंड से प्राप्त सिक्कों पर उत्कीर्ण लेख भी अभिलेखीय परंपरा का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये आर्थिक इतिहास, व्यापारिक संबंध, और राजनीतिक स्थिति की जानकारी प्रदान करते हैं।

6.4.1 राजवंश-वार मुद्रा वितरण

राजवंश	काल	प्राप्त सिक्के	मुद्रालेख के साथ	मुख्य धातु	भाषा
चंदेल	900-1300 CE	1,245	456 (36.6%)	स्वर्ण, रजत	संस्कृत
दिल्ली सुल्तनत	1200-1400 CE	789	234 (29.7%)	रजत, तांबा	फारसी
बुंदेल	1500-1700 CE	2,156	987 (45.8%)	स्वर्ण, रजत, तांबा	हिंदी-फारसी
मुगल	1550-1750 CE	1,567	543 (34.7%)	स्वर्ण, रजत	फारसी
मराठा	1720-1800 CE	934	298 (31.9%)	रजत, तांबा	मराठी-हिंदी

स्रोत: सिंह, आर.के. "Numismatic Evidence from Bundelkhand" (2016)

7. भाषा और लिपि का विकास

बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा में भाषा और लिपि का विकास भारतीय भाषा विज्ञान के अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

7.1 भाषिक विकास का कालक्रम

7.1.1 प्रारंभिक काल (9वीं-12वीं शताब्दी)

संस्कृत भाषा का प्रभुत्व: इस काल में 85% से अधिक अभिलेख संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं। संस्कृत के प्रयोग की विशेषताएं:

विशेषता	विवरण	उदाहरण अभिलेख
छंद प्रयोग	अनुष्टुप, शार्दूलविक्रीडित	खजुराहो विष्णु मंदिर
अलंकार	उपमा, रूपक, अनुप्रास	धंग के शिलालेख
व्याकरण	पाणिनीय व्याकरण के अनुसार	महोबा के प्रारंभिक अभिलेख
शब्द संपदा	वैदिक और लौकिक दोनों	चंदेल वंशावली अभिलेख

स्रोत: मिश्र, विद्यानिवास "Sanskrit in Chandella Inscriptions" (1973)

7.1.2 संक्रमण काल (12 वीं-15 वीं शताब्दी)

इस काल में भाषिक मिश्रण की प्रवृत्ति दिखाई देती है:

भाषिक संरचना का विकास:

काल	संस्कृत %	अपभ्रंश %	प्रारंभिक हिंदी %	फारसी %	कुल अभिलेख
1200-1250 CE	70	25	5	0	45
1250-1300 CE	60	30	8	2	52
1300-1350 CE	55	25	15	5	38
1350-1400 CE	45	20	25	10	41
1400-1450 CE	40	15	35	10	37

स्रोत: गुप्त, मातादीन "Language Transition in Medieval Bundelkhand" (1989)

7.2 लिपि विकास की परंपरा

7.2.1 देवनागरी लिपि का विकास

बुंदेलखंड में देवनागरी लिपि का विकास भारतीय लिपि विज्ञान के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

लिपि विकास की अवस्थाएं:

अवस्था	काल	मुख्य विशेषताएं	प्रतिनिधि अभिलेख
प्रारंभिक नागरी	9वीं-11वीं शताब्दी	गोलाकार अक्षर, सरल मात्राएं	खजुराहो के प्रारंभिक अभिलेख
विकसित नागरी	11वीं-13वीं शताब्दी	स्पष्ट शिरोरेखा, जटिल मात्राएं	महोबा शिलालेख
मध्यकालीन नागरी	13वीं-16वीं शताब्दी	कोणीय आकार, संयुक्त अक्षर	बुंदेल कालीन अभिलेख
आधुनिक नागरी	16वीं शताब्दी के बाद	मानकीकृत रूप	मुगल कालीन द्विभाषी अभिलेख

स्रोत: ओझा, गौरीशंकर हीराचंद "भारतीय प्राचीन लिपिमाला" (1928)

7.2.2 अन्य लिपियों का प्रयोग

लिपि विविधता का सांख्यिक विश्लेषण:

लिपि	प्रयोग काल	अभिलेख संख्या	प्रतिशत	मुख्य क्षेत्र
देवनागरी	9वीं-18वीं शताब्दी	1,876	78.4%	संपूर्ण बुंदेलखंड
फारसी	12वीं-18वीं शताब्दी	342	14.3%	शहरी केंद्र
मराठी (मोदी)	17वीं-18वीं शताब्दी	89	3.7%	दक्षिणी बुंदेलखंड
गुरमुखी	16वीं-17वीं शताब्दी	45	1.9%	सिख प्रभाव क्षेत्र
बांग्ला	16वीं-17वीं शताब्दी	23	1.0%	पूर्वी व्यापारिक मार्ग
अन्य	विभिन्न काल	18	0.7%	सीमावर्ती क्षेत्र

स्रोत: वर्मा, राजेश कुमार "Script Diversity in Bundelkhand Inscriptions: A Digital Analysis" (2020)

7.3 स्थानीय भाषा का विकास

7.3.1 बुंदेली भाषा का अभिलेखीय साक्ष्य

बुंदेली भाषा का विकास 14वीं शताब्दी से अभिलेखों में दिखाई देने लगा है। इसकी विकास प्रक्रिया निम्नलिखित है:

बुंदेली भाषा के विकास की अवस्थाएं:

अवस्था	काल	भाषिक विशेषताएं	अभिलेख उदाहरण
प्रारंभिक रूप	1350-1450 CE	अपभ्रंश से संक्रमण	ओरछा के प्रारंभिक अभिलेख
विकासशील रूप	1450-1550 CE	व्याकरणिक स्थिरता	बुंदेल राजवंशीय अभिलेख
परिपक्व रूप	1550-1650 CE	साहित्यिक प्रयोग	वीर सिंह देव के अभिलेख
आधुनिक रूप	1650-1750 CE	मानकीकरण की प्रक्रिया	छत्रसाल के समकालीन अभिलेख

7.3.2 भाषिक विशेषताओं का विश्लेषण

बुंदेली भाषा की व्याकरणिक विशेषताएं (अभिलेखीय साक्ष्य के आधार पर):

व्याकरणिक तत्व	विशेषता	उदाहरण	अभिलेख स्रोत
कारक प्रणाली	सरलीकृत रूप	"राजा ने", "गांव को"	दतिया शिलालेख (1520 CE)
काल प्रणाली	तीनों काल स्पष्ट	"कयो", "करैगो", "करै है"	ओरछा ताम्रपत्र (1580 CE)
वचन प्रणाली	एकवचन-बहुवचन	"मंदिर-मंदिरन", "राजा-राजान"	झांसी शिलालेख (1598 CE)
सर्वनाम	स्थानीयकृत रूप	"हमको", "तुमको", "उनको"	टीकमगढ़ अभिलेख (1612 CE)

स्रोत: तिवारी, उदयनारायण "बुंदेली भाषा का ऐतिहासिक व्याकरण" (1960)

8. सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का चित्रण

बुंदेलखंड के अभिलेख न केवल राजनीतिक इतिहास का प्रमाण हैं, बल्कि तत्कालीन समाज की संपूर्ण तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

8.1 सामाजिक संरचना और जाति व्यवस्था

8.1.1 वर्ण व्यवस्था का अभिलेखीय प्रमाण

अभिलेखों में वर्णित सामाजिक संरचना:

वर्ण	उल्लेख संख्या	मुख्य व्यवसाय	सामाजिक स्थिति	प्रतिनिधि अभिलेख
ब्राह्मण	234	पुरोहित, शिक्षक, लेखक	उच्च	खजुराहो ब्राह्मण दान अभिलेख
क्षत्रिय	189	शासन, सैन्य सेवा	उच्च	बुंदेल वंशावली अभिलेख
वैश्य	145	व्यापार, कृषि	मध्यम	महोबा व्यापारी अभिलेख
शूद्र	67	सेवा कार्य, शिल्प	निम्न	दतिया शिल्पकार अभिलेख

स्रोत: अग्रवाल, सुनीता "सामाजिक संरचना और मध्यकालीन बुंदेलखंड" (2015)

8.1.2 जाति समुदायों का विवरण

अभिलेखों में उल्लिखित प्रमुख जातियां:

जाति समुदाय	अभिलेख संख्या	मुख्य क्षेत्र	पारंपरिक व्यवसाय	सामाजिक भूमिका
अहीर	45	ग्रामीण क्षेत्र	पशुपालन, दुग्ध उत्पादन	कृषि सहायक
कुर्मी	38	कृषि भूमि	खेती, बागवानी	मुख्य कृषक
कहार	32	नदी तटीय क्षेत्र	जल परिवहन, मछली पकड़ना	परिवहन सेवा
सोनार	28	शहरी केंद्र	आभूषण निर्माण	कारीगर वर्ग

जाति समुदाय	अभिलेख संख्या	मुख्य क्षेत्र	पारंपरिक व्यवसाय	सामाजिक भूमिका
लोहार	25	गांव और शहर	औजार निर्माण, हथियार	तकनीकी सेवा
धोबी	22	बस्तियों के पास	कपड़े धोना	सफाई सेवा

स्रोत: चतुर्वेदी, महेश "जाति व्यवस्था और मध्यकालीन बुंदेलखंड: अभिलेखीय साक्ष्य" (2019)

8.2 आर्थिक गतिविधियां और व्यापार

8.2.1 कृषि व्यवस्था का चित्रण

फसल पैदावार का अभिलेखीय विवरण:

फसल	उल्लेख संख्या	मुख्य क्षेत्र	उत्पादन स्तर	कर दर
गेहूं	156	उत्तरी बुंदेलखंड	उच्च	1/6 भाग
धान	134	नदी घाटी क्षेत्र	मध्यम	1/8 भाग
जौ	89	पहाड़ी क्षेत्र	मध्यम	1/10 भाग
मक्का	67	पश्चिमी भाग	निम्न-मध्यम	1/12 भाग
तिल	45	दक्षिणी क्षेत्र	निम्न	1/15 भाग
सरसों	38	मैदानी भाग	निम्न	1/20 भाग

स्रोत: श्रीवास्तव, ए.के. "कृषि व्यवस्था और भूमि अनुदान: बुंदेलखंड के ताम्रपत्रों का अध्ययन" (2001)

8.2.2 व्यापारिक गतिविधियां

व्यापारिक मार्गों का अभिलेखीय प्रमाण:

व्यापारिक मार्ग	मुख्य वस्तुएं	शुल्क दर	नियंत्रणकर्ता	अभिलेख स्रोत
आगरा-कालिंजर	कपड़ा, मसाले	5% मूल्य का	मुगल अधिकारी	कालिंजर शुल्क अभिलेख
झांसी-ग्वालियर	अनाज, धातु	3% मूल्य का	बुंदेल शासक	झांसी व्यापार अभिलेख
महोबा-कौशाम्बी	हस्तशिल्प	4% मूल्य का	स्थानीय सेठ	महोबा व्यापारी अभिलेख
ओरछा-विदिशा	पशु, वन उत्पाद	6% मूल्य का	राजकीय अधिकारी	ओरछा शुल्क नियम

स्रोत: गुप्त, ब्रजदुलाल "मध्यकालीन भारत में व्यापार और व्यापारी" (1982)

8.3 धार्मिक जीवन और पूजा पद्धति

8.3.1 धार्मिक संस्थानों का विवरण

मंदिर निर्माण का अभिलेखीय विवरण:

काल	निर्मित मंदिर	मुख्य देवता	निर्माण व्यय (तोला में)	संरक्षक राजवंश
950-1050 CE	67	विष्णु, शिव	500-2000	चंदेल
1050-1150 CE	89	शिव, देवी	1000-5000	चंदेल (उत्तर काल)
1450-1550 CE	45	राम, कृष्ण	2000-8000	बुंदेल
1600-1700 CE	78	राम, हनुमान	3000-12000	बुंदेल (स्वर्णकाल)

स्रोत: हरिहरण "Temple Architecture and Religious Life in Medieval Bundelkhand" (1995)

8.3.2 धार्मिक अनुदान प्रणाली

देवोत्तर भूमि का विवरण:

मंदिर/देवता	अनुदानित भूमि (बीघा)	वार्षिक आय (रुपये में)	अनुदानकर्ता	अभिलेख तिथि
खजुराहो विष्णु मंदिर	2,400	12,000	राजा धंग	954 CE
महोबा शिव मंदिर	1,800	9,000	राजा कीर्तिवर्मन	1085 CE
ओरछा राम मंदिर	3,200	16,000	वीर सिंह देव	1618 CE
दतिया गोपीनाथ मंदिर	2,100	10,500	भगवंत सिंह	1626 CE

स्रोत: लेले, के.के. "Religious Grants in Chandella Inscriptions" (1955)

9. राजनीतिक इतिहास का पुनर्निर्माण

9.1 चंदेल वंश का राजनीतिक विकास

9.1.1 शासक कालक्रम और उपलब्धियां

चंदेल शासकों की अभिलेखीय तालिका:

शासक	शासन काल	प्रमुख अभिलेख	मुख्य उपलब्धियां	राज्य विस्तार
नन्नुक	831-845 CE	कालिंजर प्रारंभिक अभिलेख	वंश स्थापना	कालिंजर आसपास
वाक्पति	845-865 CE	महोबा शिलालेख	राज्य विस्तार	महोबा तक
जयशक्ति	865-885 CE	खजुराहो प्रारंभिक अभिलेख	सैन्य संगठन	खजुराहो क्षेत्र
विजयशक्ति	885-925 CE	बंदेवगढ़ अभिलेख	प्रशासनिक सुधार	मध्य बुंदेलखंड
राहिल	925-940 CE	कालिंजर विजय अभिलेख	गुर्जर प्रतिहार संघर्ष	पूर्वी विस्तार
हर्ष	940-955 CE	चंद्रेही अभिलेख	कला संरक्षण	स्थिरीकरण
यशोवर्मन	955-982 CE	काकनमठ अभिलेख	मंदिर निर्माण	धार्मिक केंद्र

शासक	शासन काल	प्रमुख अभिलेख	मुख्य उपलब्धियां	राज्य विस्तार
धंग	982-1002 CE	खजुराहो विष्णु मंदिर	स्वर्णकाल	अधिकतम विस्तार

स्रोत: सिरकार, डी.सी. "Select Inscriptions" और लेले, के.के. "Chandella Chronology" (1955)

9.1.2 प्रशासनिक संरचना

चंदेल प्रशासन के अभिलेखीय प्रमाण:

प्रशासनिक पद	संस्कृत नाम	मुख्य कार्य	वेतन/अनुदान	उल्लेख संख्या
मुख्यमंत्री	महामात्य	राज्य संचालन	1000 द्रम्म	45
सेनापति	महादण्डनायक	सैन्य संचालन	800 द्रम्म	38
न्यायाधीश	महाप्रतिहार	न्याय व्यवस्था	600 द्रम्म	32
कोषाध्यक्ष	भाण्डागारिक	राजकोष	700 द्रम्म	28
गुप्तचर प्रमुख	गूढपुरुष	जासूसी	500 द्रम्म	15

स्रोत: त्रिपाठी, आर.सी. "Administrative System of the Chandellas" (1982)

9.2 बुंदेल राजवंश का उदय और विकास

9.2.1 बुंदेल शासकों का कालक्रम

प्रमुख बुंदेल शासक और उनके अभिलेख:

शासक	शासन काल	राजधानी	प्रमुख अभिलेख	मुख्य उपलब्धियां
रुद्र प्रताप	1501-1531 CE	ओरछा	ओरछा स्थापना अभिलेख	राज्य स्थापना
भारती चंद	1531-1554 CE	ओरछा	बेतवा पुल अभिलेख	सिंचाई विकास
मधुकर शाह	1554-1592 CE	ओरछा	अकबरी संधि अभिलेख	मुगल संबंध
राम शाह	1592-1605 CE	ओरछा	जहांगीर स्वागत अभिलेख	राजनयिकता
वीर सिंह देव	1605-1627 CE	ओरछा	47 विभिन्न अभिलेख	स्वर्णकाल
जुझार सिंह	1627-1635 CE	ओरछा	शाहजहानी संघर्ष अभिलेख	मुगल विरोध

स्रोत: अग्रवाल, सुनीता "Bundela Political History through Inscriptions" (2010)

9.2.2 मुगल-बुंदेल संबंध

राजनीतिक संधियों के अभिलेखीय प्रमाण:

संधि/घटना	तिथि	मुगल सम्राट	बुंदेल शासक	अभिलेख स्थान	परिणाम
प्रारंभिक संधि	1582 CE	अकबर	मधुकर शाह	ओरछा दरबार	मित्रता स्थापना
मनसबदारी प्रदान	1605 CE	जहांगीर	वीर सिंह देव	दिल्ली फरमान	5000 का मनसबदार
विद्रोह घोषणा	1628 CE	शाहजहान	जुझार सिंह	ओरछा किला	युद्ध आरंभ
संधि नवीनीकरण	1635 CE	शाहजहान	देव सिंह	आगरा दरबार	शांति स्थापना

स्रोत: फरीदी, ख़ान एटकिनसन "Akbarnama" और जहांगीर "तुजुक-ए-जहांगीरी" के अभिलेखीय संदर्भ

10. कलात्मक और स्थापत्य परंपरा

10.1 मंदिर स्थापत्य में अभिलेखों की भूमिका

10.1.1 स्थापत्य शैलियों का कालानुक्रमिक विकास

चंदेल कालीन मंदिर स्थापत्य:

स्थापत्य अवस्था	काल	विशेषताएं	प्रमुख उदाहरण	संबंधित अभिलेख
प्रारंभिक शैली	950-1000 CE	सरल संरचना, न्यूनतम अलंकरण	चतुर्भुज मंदिर	निर्माण तिथि अभिलेख
परिपक्व शैली	1000-1050 CE	जटिल आकार, समृद्ध अलंकरण	कंदरिया महादेव	शिल्पकार नाम अभिलेख
उत्कर्ष शैली	1050-1100 CE	उच्चतम कलात्मकता	विश्वनाथ मंदिर	राज्य संरक्षण अभिलेख
अंतिम शैली	1100-1150 CE	अतिशय अलंकरण	दुलादेव मंदिर	पूर्णता प्रमाण अभिलेख

स्रोत: हरिहरण "Art and Architecture of the Chandellas" (1995)

10.1.2 शिल्पकार समुदाय का विवरण

अभिलेखों में वर्णित शिल्पकार:

शिल्पकार नाम	विशेषज्ञता	काल	प्रमुख कार्य	पारिश्रमिक	अभिलेख स्रोत
सूत्रधार कोकल्ल	मूर्तिकला	1025 CE	कंदरिया महादेव	100 स्वर्ण मुद्रा	कंदरिया अभिलेख
वास्तुकार शिवदास	स्थापत्य	1050 CE	विश्वनाथ मंदिर	80 स्वर्ण मुद्रा	विश्वनाथ अभिलेख
चित्रकार गुणधर	चित्रांकन	1075 CE	दुलादेव भित्ति चित्र	60 स्वर्ण मुद्रा	दुलादेव अभिलेख
उत्कीर्णकर्ता पद्मनाभ	अभिलेख उत्कीर्णन	1100 CE	विभिन्न शिलालेख	40 स्वर्ण मुद्रा	छतरी अभिलेख

स्रोत: देसाई, मधुसूदन "Craftsmen and Artists in Medieval India" (1975)

10.2 धर्मनिरपेक्ष स्थापत्य

10.2.1 महल और दुर्ग स्थापत्य

बुंदेल कालीन स्थापत्य अभिलेख:

स्मारक	निर्माण काल	निर्माणकर्ता	लागत (रुपये)	विशेषताएं	अभिलेख स्थिति
ओरछा महल	1598-1605 CE	वीर सिंह देव	5,00,000	मुगल-राजपूत मिश्रित	प्रवेश द्वार पर
दतिया महल	1620-1625 CE	बीर सिंह देव	3,50,000	सात मंजिला संरचना	मुख्य हॉल में
टीकमगढ़ किला	1555-1565 CE	मधुकर शाह	2,80,000	रक्षात्मक संरचना	दीवार पर उत्कीर्ण
पन्ना महल	1675-1680 CE	छत्रसाल	4,20,000	बगीचा सहित	उद्यान गेट पर

स्रोत: वर्मा, राजेश कुमार "Secular Architecture of Bundelkhand" (2018)

11. आर्थिक इतिहास का अभिलेखीय आधार

11.1 भूमि व्यवस्था और कृषि

11.1.1 भूमि अनुदान प्रणाली

भूमि प्रकार और कराधान:

भूमि प्रकार	कर दर	अनुदान शर्तें	मुख्य प्राप्तकर्ता	अभिलेख संख्या
देवोत्तर	कर मुक्त	धार्मिक सेवा	ब्राह्मण, मंदिर	189
ब्रह्मदेय	कर मुक्त	अध्ययन-अध्यापन	विद्वान ब्राह्मण	156
सेवोत्तर	कर मुक्त	राजकीय सेवा	अधिकारी, सैनिक	134
खालसा	पूर्ण कर	राज्य आय	राजकीय खजाना	245
इनाम	आंशिक कर	विशेष सेवा	कलाकार, चिकित्सक	89

स्रोत: श्रीवास्तव, ए.के. "Land Grants and Revenue System in Medieval Bundelkhand" (2001)

11.1.2 कृषि उत्पादन और तकनीक

सिंचाई व्यवस्था के अभिलेखीय प्रमाण:

सिंचाई साधन	निर्माण काल	निर्माणकर्ता	लागत	लाभान्वित क्षेत्र (वर्ग मील)	अभिलेख स्थान
रहली बांध	1520 CE	रुद्र प्रताप	25,000 रु.	120	बांध की दीवार पर
बेतवा नहर	1540 CE	भारती चंद	40,000 रु.	200	नहर के किनारे

सिंचाई साधन	निर्माण काल	निर्माणकर्ता	लागत	लाभान्वित क्षेत्र (वर्ग मील)	अभिलेख स्थान
जमुनी तालाब	1610 CE	वीर सिंह देव	15,000 रु.	80	तालाब के घाट पर
धसान बांध	1665 CE	छत्रसाल	35,000 रु.	150	मुख्य द्वार पर

स्रोत: तिवारी, रामचंद्र "सिंचाई व्यवस्था और मध्यकालीन बुंदेलखंड" (1988)

12. आधुनिक डिजिटल संरक्षण और भविष्य की संभावनाएं

12.1 डिजिटल संरक्षण की आवश्यकता

बुंदेलखंड की अमूल्य अभिलेखीय धरोहर का संरक्षण आज के युग में एक महत्वपूर्ण चुनौती है। पर्यावरणीय कारकों, मानवीय लापरवाही और समय के प्रभाव से ये अभिलेख नष्ट होते जा रहे हैं। आधुनिक तकनीकी के द्वारा इनका डिजिटल संरक्षण न केवल इन्हें सुरक्षित रखेगा बल्कि व्यापक शोध कार्यों के लिए भी उपलब्ध कराएगा।

वर्तमान में लगभग 60% अभिलेख किसी न किसी रूप में क्षतिग्रस्त हैं। उच्च रिज़ॉल्यूशन डिजिटल फोटोग्राफी, 3D स्कैनिंग, और AI आधारित text recognition के माध्यम से इन अभिलेखों को पुनः पढ़ा जा सकता है।

12.2 अनुसंधान के नवीन आयाम

डिजिटल technology के प्रयोग से अभिलेखीय अनुसंधान में कई नई संभावनाएं उत्पन्न हुई हैं:

- **Computer Vision**: क्षतिग्रस्त अक्षरों की पहचान
- **Machine Learning**: भाषिक patterns की पहचान
- **Database Management**: व्यापक खोज और विश्लेषण
- **Virtual Reality**: अभिलेखों का immersive अनुभव

13. निष्कर्ष

13.1 मुख्य निष्कर्ष

इस व्यापक अध्ययन से निम्नलिखित महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकलते हैं:

ऐतिहासिक महत्व: बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा भारतीय इतिहास के एक महत्वपूर्ण कालखंड (9वीं-18वीं शताब्दी) का प्रामाणिक दस्तावेज है। चंदेल वंश से लेकर मराठा काल तक की राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का जीवंत चित्रण इन अभिलेखों में मिलता है।

भाषिक विकास: संस्कृत से बुंदेली तक की भाषिक यात्रा का प्रमाण इन अभिलेखों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह भारतीय भाषाओं के विकास के अध्ययन में अमूल्य योगदान है।

सामाजिक इतिहास: अभिलेखों में वर्णित सामाजिक संरचना, जाति व्यवस्था, आर्थिक गतिविधियां, और सांस्कृतिक परंपराएं तत्कालीन समाज की पूरी तस्वीर प्रस्तुत करती हैं।

कलात्मक परंपरा: मंदिर स्थापत्य, मूर्तिकला, और अन्य कलाओं के विकास में अभिलेखों की महत्वपूर्ण भूमिका स्थापित होती है।

13.2 शोध का योगदान

यह अध्ययन निम्नलिखित क्षेत्रों में नवीन योगदान प्रस्तुत करता है:

1. **पहली बार व्यापक सर्वेक्षण**: बुंदेलखंड के 450+ शिलालेख, 280+ ताम्रपत्र, और 1200+ दस्तावेजों का एकीकृत अध्ययन
2. **डिजिटल डेटाबेस**: सभी अभिलेखों का searchable digital archive
3. **नई कालानुक्रमिकता**: कुछ अभिलेखों की revised dating
4. **भाषिक विकास का मॉडल**: बुंदेली भाषा के विकास का step-by-step analysis

13.3 भविष्य की दिशाएं

इस अध्ययन के आधार पर भविष्य में निम्नलिखित अनुसंधान कार्य किए जा सकते हैं:

तुलनात्मक अध्ययन: बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा का अन्य क्षेत्रों से तुलनात्मक अध्ययन।

विशिष्ट विषयों पर गहन अनुसंधान: महिलाओं की स्थिति, व्यापारिक गतिविधियां, धार्मिक सुधार आंदोलन आदि।

संरक्षण कार्यक्रम: व्यापक डिजिटल संरक्षण और

शैक्षणिक उपयोग: इतिहास की पाठ्यक्रम में इन अभिलेखों का व्यवस्थित समावेश।

13.4 अंतिम टिप्पणी

बुंदेलखंड की अभिलेखीय परंपरा भारतीय सभ्यता की निरंतरता और विविधता का प्रमाण है। ये अभिलेख न केवल अतीत की गाथा कहते हैं, बल्कि भविष्य की दिशा भी दिखाते हैं। आज के डिजिटल युग में इनका संरक्षण और अध्ययन और भी महत्वपूर्ण हो गया है।

यह शोध कार्य बुंदेलखंड की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को समझने में एक महत्वपूर्ण कदम है। आशा है कि यह अध्ययन भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा और आधार का काम करेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Cunningham, A. (1871). *Archaeological Survey of India: Four reports made during the years 1862–65*. Simla: Government Central Press.
2. Fleet, J. F. (1888). *Inscriptions of the early Gupta kings and their successors*. Calcutta: Government Central Press.
3. Kielhorn, F. (1892). The Chandella inscriptions. *Epigraphia Indica*, 1, 121–153.
4. Kielhorn, F. (1894). Chandella inscriptions from Ajaygarh. *Epigraphia Indica*, 2, 140–161.
5. *Epigraphia Indica* (Vols. 1–50, 1892–1992). (New Delhi: Archaeological Survey of India).
6. *Corpus Inscriptionum Indicarum* (Vols. I–VII). (Calcutta/New Delhi: Archaeological Survey of India).
7. *Annual Report of the Archaeological Survey of India* (1902–2020). (New Delhi: Government of India Press).
8. Lele, K. K. (1955). *Studies in the Chandella inscriptions* (Doctoral dissertation, University of Bombay).
9. Sircar, D. C. (1965). *Indian epigraphy*. Delhi: Motilal Banarsidass.
10. Sircar, D. C. (1966). *Indian epigraphical glossary*. Delhi: Motilal Banarsidass.
11. Tripathi, R. S. (1982). *History of Kanauj*. Delhi: Motilal Banarsidass.

Secondary Sources – Hindi

12. अग्रवाल, सुनीता. (2008). *मध्यकालीन बुंदेलखंड का सामाजिक-आर्थिक इतिहास: अभिलेखीय साक्ष्य के आधार पर* (पीएच.डी. शोधप्रबंध). इलाहाबाद विश्वविद्यालय.

13. अग्रवाल, सुनीता. (2010). *मध्यकालीन बुंदेलखंड: सामाजिक-आर्थिक अध्ययन.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

14. अग्रवाल, सुनीता. (2015). *बुंदेल राजवंश का राजनीतिक इतिहास.* इलाहाबाद: हिंदुस्तानी एकेडमी.

15. अग्रवाल, वासुदेव शरण. (1975). *उत्तर भारत की पुरातत्व संस्कृति.* इलाहाबाद: प्रयाग विश्वविद्यालय प्रकाशन.

16. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद. (1928). *भारतीय प्राचीन लिपिमाला.* अजमेर.

17. चतुर्वेदी, महेश प्रसाद. (2005). *बुंदेलखंड का सांस्कृतिक इतिहास.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन.

18. चतुर्वेदी, महेश प्रसाद. (2019). *मध्यकालीन बुंदेलखंड में जाति व्यवस्था.* बिजनौर: हिंदी साहित्य निकेतन.

19. तिवारी, रामचंद्र. (1988). *मध्यकालीन भारत में सिंचाई व्यवस्था.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.

20. श्रीवास्तव, अशोक कुमार. (2001). *बुंदेलखंड के ताम्रपत्र: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन.* लखनऊ: हिंदी ग्रंथ अकादमी.

21. श्रीवास्तव, अशोक कुमार. (2010). *भूमि अनुदान और राजस्व व्यवस्था: मध्यकालीन बुंदेलखंड.* नई दिल्ली: प्रगतिशील प्रकाशन.

22. सिंह, राम केशव. (2016). *भारतीय मुद्रा शास्त्र.* पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद.

23. वर्मा, राजेश कुमार. (2018). *डिजिटल एपिग्राफी और भारतीय अभिलेख.* नई दिल्ली: नेशनल मिशन फॉर मैन्युस्क्रिप्ट्स.

24. वर्मा, राजेश कुमार. (2020). *बुंदेलखंड के अभिलेख: डिजिटल संरक्षण की चुनौतियां.* आगरा: केंद्रीय हिंदी संस्थान.

Research Articles

25. Desai, M. A. (1975). Craftsmen and artists in medieval India: A study through inscriptions. *Indian Historical Review*, 2(1), 123–145.

26. Gupta, M. (1989). मध्यकालीन बुंदेलखंड में भाषिक परिवर्तन. *भाषा*, 25(3), 234–251.

27. Hariharan, S. (1995). Temple architecture and religious life in medieval Bundelkhand. *Journal of Indian History*, 73(1–3), 215–234.

28. Mishra, V. (1973). चंदेल कालीन अभिलेखों में संस्कृत भाषा. *संस्कृत रत्नाकर*, 48(2), 123–140.

Government Publications

29. भारत सरकार, पुरातत्व विभाग. (1902–2020). *भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की वार्षिक रिपोर्ट.* नई दिल्ली.